सूरः मुदस्सिर के इम्तयाज़ात

मजमउल ब्यान में ब रिवायत उबैय बिन कअब जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम से मंकूल है कि आप ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस सूरः को पढ़ेगा तो ख़ुदावन्दे आलम उसको जनाबे रिसालते मआब स० की तस्दीक़ करने वालों के मिस्ल दस नेकियां अता फ़रमायेगा और हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो शख़्स फ़रीजा में इस सूरः को पढ़े तो ख़ुदावन्दे आलम पर उसका हक होगा कि उसको जनाबे रसूले ख़ुदा के साथ आप स० के दर्जा में जगह दे नीज इसके पढ़ने से उसकी जिन्दगी में कभी कोई शकावत ज़ाहिर नहीं होगी और जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व वसल्लम से मंकूल है कि जो शख़्स पाबन्दी से यह सूरः पढ़ता रहे तो उसे अज़े अजीम हासिल होगा और बाद ख़त्म सूरः हिफ़्ज़े क़ुरान की दुआ करे तो जब तक याद न करे मौत नहीं आयेगी! जो शख़्स मुदाविमत करे और आख़िर में जिस हाजत के लिए दुआ करे वह बर आयेगी।

सूरः मुदस्सिर

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इबतिदा अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

सूरः मुदस्सिर

या अय्युहल मुद्दस्सि०र०
ऐ (मेरे) कपड़ा ओढ़ने वाले (रसूल स०)
कुम फ़ अंजिर० व रब-ब-क फ़
उठो और लोगों को अज़ाब से डराओ, और
कब्बिर० व रब्बि या-ब-क
अपने परवरदिगार की बड़ाई (ब्यान) करो
फ़तहिहर० वर रुज-ज़ फहजुर०
और अपने कपड़े पाक रखो, और गंदगी से
वला तम्नुन तस्तक्सिर व
अलग रहो, और इस तरह एहसान न करो
लि रब्बि-क फ़स्बिर० फ़-इज़ा
कि ज़्यादा के ख़्वाहिस्तगार बनो, और अपने
नुकि-र फ़िन्नाकूर०
परवरदिगार के लिए सब्र करो, फिर जब
फ़-ज़ालि-क यौमइज़िन
सूर फूंका जायेगा, तो वह दिन इंतेहाई
यौमुन अ़सीर० ज़र्नी व मन
सख़्त होगा और काफ़िरों पर आसान हर्गिज़
ख़लक़्तु वहीदा व ज अ़ल्तु
नहीं होगा, (ऐ रसूल) मुझे और उस शख़्स

सूरः मुदस्सिर

लहु मालम्मम्दूदा० व बनी-न
को छोड़ दे जिसे मैंने अकेला पैदा किया,
शुहूदा० व मह्हद्तु लहु
और उसे बहुत सा माल दिया, और नज़र
तम्हीदा० सुम-म यत्मअु अन
के सामने रहने वाले बेटे दिये और उसे हर
अज़ी-द० कल्ला० इन्नहु
तरह से सामान में वुस्अत दी, फिर इस पर
का-न लि आयातिना अ़नीदा०
भी वह तमा रखता है कि और बढ़ाओं, यह
स-उरहि-क़-हु स़-अूदा०
हर्गिज न होगा यह तो मेरी आयतों का
इन्नहु फक्-क-र व क़द-द-र०
दुश्मन था, तो मैं अंक़रीब उसे सख़्त अज़ाब
फ-कुति-ल कै-फ कद-द-र०
में मुब्तेला करूंगा, उस ने फ़िक्र की और
सुम-म कुति-ल कै-फ़
तजवीज़ की, तो यह (कम्बख़्त) मार डाला
कद-द-र० सुम-म न-ज-र
जायेगा उसने क्यों कर तजवीज़ की? फिर

सुम-म अ़-ब-स व ब-स-र० सुम-म
मारा जाये उसे क्योंकर तजवीज़ की, फिर
अदब-र वस्तक-ब-र०
ग़ौर किया, फिर त्योरी चढ़ाई फिर मुंह बना
फ-का-ल इन हाज़ा इल्ला
लिया, फिर पीठ फेर कर चला गया और
सिहरुय युअसरु० इन हाज़ा
अकड़ बैठा, फिर कहने लगा कि यह तो
इल्ला क़ौलुल बशर० स
बस जादू है जो (अगलों पर चला आता है)
उस्लीही सक़र० वमा
यह तो बस आदमी का कलाम है (ख़ुदा का
अदरा-क मा सक़र० ला
नहीं) मैं उसे अंक़रीब जहन्नम में झोंक
तुब्क़ी वला तज़र० लव्वाहतुल
दूंगा, और तुम क्या जानो कि जहन्नम क्या
लिल बशर० अ़लैहा तिस-अ़-त
है? वह न बाकी रखेगी और न छोड़ देगी,
अ़शर० वमा जअ़ल्ना
और बदन को जला कर सियाह कर देगी,

सूरः मुद्दस्सिर

अस्हाबन्नारि इल्ला
उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते मुतअय्यन) हैं,
मलाइकतवं वमा जअ़ल्ना
और हमने जहन्नम का निगहबान तो बस
अ़िद-द-तहुम इल्ला फ़ित्नतल
फ़रिश्तों को बनाया है उनका यह शुमार भी
लिल्लज़ी-न क-फ़-रू
काफ़िरों की आज़माइश के लिए मुक़र्रर
लियस्तैक़िनल्लज़ी-न ऊतुल
किया ताकि अहले किताब (फ़ौरन) यक़ीन
किता-ब व यज़्दादल लज़ी-न
करलें, और मोमिनों का ईमान और ज्यादा
आमनू ईमानं॰ वला
हो और अहले किताब और मोमिनीन (किसी
यरताबल लज़ी-न ऊतूल
तरह) शक न करें और जिन लोगों के
किता-ब वल मुअमिनू-न व लि
दिलों में (निफ़ाक का) मर्ज़ हो और काफ़िर
य-कूलल्लज़ी-न फ़ी कुलूबिहिम
लोग कह बैठेंगे कि इस मसल (के ब्यान

म-रज़ुन वल काफ़िरू-न
करने) से ख़ुदा का क्या मतलब है? यूं ख़ुदा
माज़ा अरादल्लाहु बि हाज़ा
जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है
म-सला॰ ज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु
और जिसे चाहता है हिदायत करता है और
मैंय्यशाउ व यह्दी मैंय्यशाउ
तुम्हारे परवरदिगार के लश्करों को उसके
वमा यअ़्ल-मु जुनू-द रब्बि-क
सिवा कोई नहीं जानता और यह तो
इल्ला हु-व वमा हि-य इल्ला
आदमियों के लिए बस नसीहत है, सुन
ज़िक्रा लिल बशर॰ कल्ला
रखो (हमें) चांद की क़सम है, और रात की
वल्क़मर॰ वल्लैलि इज़ा
जब जाने लगे, और सुब्ह की जब रौशन हो
अद-ब-र वस्सुब्हि इज़ा
जाये, कि वह जहन्नम भी एक बहुत बड़ी
अस-फ़-र इन्नहा ल इह्दल
(आफ़त) है और लोगों को डराने वाली है,

मिनल मुसल्लीन० व लम
साथ हम भी बुरे कामों में घुस पड़े थे, और
नकु नुटिअ़मुल मिस्कीन० व
रोज़े जज़ा को झुटलाया करते थे, (और यू
कुन्ना नखूज़ु मअ़ल ख़ाइज़ीन० व
ही रहे) यहां तक कि हमें मौत आ गई, तो
कुन्ना नुकज़्ज़िबु बि
इस वक़्त उन्हें सफ़ारिश करने वालों की
यौमिद्दीन० हत्ता आतानल
सफ़ारिश काम न आयेगी, और उन्हें क्या
यक़ीन० फ़मा तंफ़-अुहुम
हो गया है? कि नसीहत से मुंह मोड़े हुए हैं,
शफ़ाअतुश्शाफ़िअ़ीन० फ़मा
गोया वह वहशी गधे हैं, कि शेर से (दुम
लहुम अनित्तज़्किरति
दबा कर) भागते हैं, अस्ल बात यह है कि
मुअ़रिज़ीन० क-अन्नहुम
उन में से हर शख़्स इसका मुतमन्नी है कि
हुमुरुम मुस्तंफ़िरह० फ़रत
उसे खुली हुई (आसमानी किताबें अता की

सूरः मुदस्सिर

कुबर० नज़ीरल लिल बशर०
(सब के लिए नहीं) बल्कि तुम में से जो
लिमन शा-अ मिंकुम
शख़्स (नेकी की तरफ़) आगे बढ़ना और
अंय-य-त-क़द-द-म औ
(बुराई से) पीछे हटना चाहे, हर शख़्स अपने
य-त-अख़्-ख़ा-र० कुल्लु
आमाल के बदले कर है मगर दाहिने हाथ
नफ़्सिम बिमा क-स-बत
(में नामा आमाल लेने) वाले बहिश्त के
रहीनहुन इल्ला अस्हाबल
बाग़ों में गुनहगारों से बाहम पूछ रहे होंगे,
यमीनि फ़ी जन्नातिय
कि आख़िर तुम्हें दोज़ख़ में कौन सी चीज़
य-त-साअलू-न अ़निल
(घसीट) लाई, वह लोग कहेंगे न तो हम
मुज़्रिमीन० मा स-ल-क कुम
नमाज़ पढ़ा करते थे और न मुहताजों को
फ़ी स-क़र० कालू लम नकु
खाना खिलाते थे और अहले बातिल के

मिन क़स्वरह० बल युरीदु

जाये), यह तो हर्गिज़ न होगा बल्कि यह तो

कुल्लुम्रिइम मिंहुम औंय्युअता

आख़िरत ही से नहीं डरते, हां! हां! बेशक

सुहुफ़म मुनश्शरह० कल्ला

यह (क़ुरान सरासर) नसीहत है, तो चाहे

इन्नहु तज़्किरह० फ़मन

इसे याद रखे, और ख़ुदा की मशीयत के

शा-अ ज़-क-रह० वमा

बग़ैर तो यह लोग याद रखने वाले नहीं

यज़्कुरु-न इल्ला औंय

वही (बन्दों के) डराने के क़ाबिल और

यशाअल्लाह० हु-व अहलुत

बख़्शिश का मालिक है।

तक़्वा व-अहलुल मग़्फ़िरह०

सूरः मुदस्सिर